पूर्वोत्तर में भू-पर्यटन

प्रलिम्सि के लयि

भारतीय भूवैज्ञानकि सर्वेक्षण, भू-वरिासत स्थल

मेन्स के लयि

पूर्वोत्तर क्षेत्र में भू-पर्यटन का महत्त्व

चर्चा में क्यों?

हाल ही में ‘भारतीय भूवैज्ञानकि सर्वेक्षण’ (GSI) ने भू-पर्यटन को बढ़ावा देने के लयि पूर्वोत्तर में कुछ भूवैज्ञानकि स्थलों की पहचान की है।

- देश में स्वीकृत 32 भू-पर्यटन या भू-वरिासत स्थलों में पूर्वोत्तर के 12 स्थानों को शामलि कयिा गया है।

प्रमुख बदिु

भू-वरिासत स्थल:

- भू-वरिासत का तात्पर्य ऐसी भूवैज्ञानकि मुखाकृतयिों या स्थानों से है, जो स्वाभावकि रूप से या सांस्कृतकि रूप से महत्त्वपूर्ण हैं और पृथ्वी के वकिास या पृथ्वी वज्ञिान के इतहिास के लयि अंतर्दृष्ट िप्रदान करते हैं अथवा इनका उपयोग शैक्षकि उद्देश्यों के लयि कयिा जा सकता है।
- भारतीय भूवैज्ञानकि सर्वेक्षण (GSI) वह मूल नकिाय है, जो देश में भू-वरिासत स्थलों/राष्ट्रीय भूवैज्ञानकि स्मारकों की पहचान और संरक्षण की दशिा में प्रयास कर रहा है।
- **इनमें शामलि कुल स्थल:** छत्तीसगढ़ में समुद्री गोंडवाना जीवाश्म पार्क; हमिाचल प्रदेश में शवािलकि कशेरुकी जीवाश्म पार्क; राजस्थान में स्ट्रोमेटोलाइट पार्क; कर्नाटक में पलिो लावा, आंध्र प्रदेश में एपार्चयिन अनकंफॉरमेटी और तरिुमाला पहाड़यिाँ, महाराष्ट्र में लोनार झील आद।ि

भू-पर्यटन

- भू-पर्यटन को एक ऐसे पर्यटन के रूप में परभिाषति कयिा जाता है, जो कसिी स्थान के भौगोलकि चरति्र जैसे- इसका पर्यावरण, संस्कृत,ि सौंदर्यशास्त्र, वरिासत और इसके नविासयिों की भलाई आद िको बढ़ावा देने में मदद करता है।
- यह सामुदायकि भागीदारी को बढ़ावा देगा, स्थानीय अर्थव्यवस्था में सुधार करेगा और स्थानीय संस्कृत िएवं परंपरा के प्रत िसम्मान पैदा करेगा।
- भारत ववििध भौतकि वशिेषताओं, समृद्ध सांस्कृतकि वरिासत और घटनापूर्ण प्राचीन इतहिास वाला देश है तथा यह उपमहाद्वीप युगों से वभिन्नि भूवैज्ञानकि प्रक्रयिाओं की छाप प्रदर्शति करता रहा है और दलिचस्प भूवैज्ञानकि वशिेषताओं का भंडार है।

पूर्वोत्तर में भू-वरिासत स्थल:

- **माजुली (असम):**
  - यह ब्रह्मपुत्र नदी में स्थति वशि्व के बड़े द्वीपों में से एक नदी "द्वीप"।
  - 15वीं-16वीं शताब्दी के संत-सुधारक शरीमंत शंकरदेव और उनके शषि्यों द्वारा स्थापति कई 'सत्रों' या वैष्णव मठों के कारण यह द्वीप असम में अध्यात्म का केंद्र भी है।
- **संगेस्तर त्सो (अरुणाचल प्रदेश):**
  - इसे माधुरी झील के नाम से जाना जाता है।
  - यह तब्बित की सीमा के नज़दीक है और वर्ष 1950 में एक बड़े भूकंप के कारण इसका गठन हुआ।
- **लोकटक झील (मणपिुर):**
  - यह **पूर्वोत्तर की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील** है।
  - इस झील के मुख्य आकर्षण 'फुमडीस' या तैरते हुए बायोमास और 'फुमसंग' या उन पर मछुआरों की झोपड़यिाँ हैं।

- केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान, पृथ्वी पर एकमात्र तैरता हुआ वन्यजीव निवास स्थान है, जो झील के दक्षिण-पश्चिमी भाग पर स्थित है और संगाई या भौंह-मृग, नृत्य करने वाले हरिण का अंतिम प्राकृतिक आवास है।
- **अन्य:**
  - मावमलुह केव, मौबलेई या गॉड्स रॉक, थेरियाघाट (मेघालय); उमानंद (असम), चबीमुरा, उनाकोटी (त्रिपुरा); संगीतसर त्सो (अरुणाचल प्रदेश); रीक तलंग (मिज़ोरम); नगा हिल ओफियोलाइट (नगालैंड); स्ट्रोमेटोलाइट पार्क (सिक्किम)।

संबंधित वैश्विक अवधारणा:

- यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क्स:
  - ये एकल, एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र हैं जहाँ अंतर्राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक महत्त्व के स्थलों और परिदृश्यों को सुरक्षा, शिक्षा और सतत् विकास की समग्र अवधारणा के साथ प्रबंधित किया जाता है।
  - जबकि 44 देशों में फैले 169 यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क हैं, भारत के पास अभी तक अपना एक भी नहीं है।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण

- इसकी स्थापना वर्ष 1851 में मुख्य रूप से रेलवे के लिये कोयला भंडार की खोज के लिये की गई थी। वर्तमान में भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) खान मंत्रालय से संबद्ध कार्यालय है।
- GSI के मुख्य कार्य राष्ट्रीय भू-वैज्ञानिक सूचना और खनिज संसाधन मूल्यांकन के निर्माण व अद्यतन से संबंधित हैं।
- इसका मुख्यालय कोलकाता में है।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/geo-tourism-in-northeast